प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

माननीय राष्ट्रपति द्वारा 35वें दीक्षान्त समारोह में विद्यार्थियों को दी गयी दीक्षा

पन्तनगर। 07 नवम्बर 2023। देश की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपति मुर्मु आज पन्तनगर विश्वविद्यालय के 35वें दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। प्रशासनिक भवन स्थित दीक्षांत प्रांगण में आयोजित इस समारोह में अति विशिष्ट अतिथि उत्तराखण्ड के राज्यपाल एवं कुलाधिपति, ले. जनरल गुरमीत सिंह तथा विशेष अतिथि के रूप में रक्षा एवं पर्यटन राज्य मंत्री उत्तराखण्ड माननीय श्री अजय भट्ट एवं कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्री माननीय उत्तराखण्ड श्री गणेश जोशी मंचासीन थी। कार्यक्रम से पूर्व स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों एवं अतिथियों के साथ ग्रुप फोटोग्राफी की गयी।

राष्ट्रपति ने कहा कि विश्वविद्यालय के 35वें दीक्षांत समारोह में उपस्थित होने पर प्रसन्नता व्यक्त की और उपाधि एवं पदक प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों और प्राध्यापकों को बधाई दीं। उन्होंने बताया कि आज पदक प्राप्त करने वालों में छात्राओं की संख्या ज्यादा थी। राष्ट्रपति होने के नाते उन्होंने 50 से अधिक विश्वविद्यालयों में शिरकत की है और वहां भी छात्राओं ने सफलता का परचम लहराया हैं। उन्होंने बताया कि दीक्षांत समारोह विद्यार्थियों के लिए जीवन का महत्वपूर्ण पड़ाव होता है जहां इस दिन विद्यार्थियों के परिवार के सदस्य एवं शिक्षक गर्व का अनुभव करते हैं। उन्होंने बताया कि देश का प्रथम विश्वविद्यालय शुरूआत से ही कृषि, अनुसंधान, प्रसार के लिए उत्कृष्टता का केन्द्र बना हुआ है। पन्तनगर विश्वविद्यालय का बीज 'पन्तनगर बीज' के नाम से विश्व में विख्यात है और कृषि क्षेत्र जुड़े किसान आंख बंद कर विश्वास करते है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय विभिन्न फसलों, फलों और सब्जियों के कुल 346 उन्नत किस्मों को प्रस्तुत किया है और दो नस्लों का विकास किया है। इस वर्ष दलहनी फसलों में विश्वविद्यालय द्वारा 7 प्रजातियां विकसित की गयी है। प्रजातियों का निरंतर विकास कृषि विकास के लिए आवश्यक है। विश्वविद्यालय को तीन बार सरदार पटेल उत्कृष्ट कृषि संस्थान अवार्ड से सम्मानित किया गया है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय पुस्तकालय में 4 लाख 50 हजार से अधिक पुस्तकें उपलब्ध है और विद्यार्थियों को पुस्तकें खरीदनी नहीं पड़ती तथा उन्हीं पुस्तकों से विद्यार्थियों का अध्ययन–अध्यापन हो जाता है। अध्ययन–अध्यापन डिजिटल रूप में उपलब्ध है। उन्होंने बताया कि क्लाइमेंट और मृदा की समस्याओं से निपटने के लिए विश्व प्राकृतिक एवं जैविक खेती की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने बताया कि सम्पूर्ण विश्व इस वर्ष को अंतर्राष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष के रूप में मना रहा है। उत्तराखण्ड मोटे अनाज के उत्पादन में अग्रणी राज्य है। विश्वविद्यालय द्वारा कृषि में छिड़काव हेतु ड्रोन का निर्माण किया गया है जो कुछ क्षणों में कई हैक्टेयर भूमि में छिड़काव कर सकता है। इससे किसानों के समय की बचत होगी। इस उपलब्धि के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओं को बधाई दी। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि विश्वविद्यालय इस क्षेत्र को हमेशा याद करेंगे तथा विश्वविद्यालय के आलू के पराठे एवं फत्तु के समोसे के लिए पुनः यहां आएंगे।

माननीय कुलाधिपति लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह ने कहा कि हरित क्रांति जननी, भूमि में माननीय राष्ट्रपति जी की उपस्थिति से न केवल इस विश्वविद्यालय का, बल्कि पूरे उत्तराखण्ड का मान बढ़ा है और उनकी उपस्थिति से, इस दीक्षांत समारोह में दीक्षा प्राप्त करने वाले प्रत्येक छात्र–छात्रा को एक ऐसा हौसला और मार्गदर्शन मिलेगा, जो इनके पूरे जीवन को आलोकित करेगा। उन्होंने पं. पन्त जी को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि देते हुए बताया कि देश का प्रथम कृषि विश्वविद्यालय पंतनगर विश्वविद्यालय जो वर्ष 1960 में उत्तर प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित किया गया। इसके उपरांत वर्ष 1972 में विश्वविद्यालय का नाम महान स्वतंत्रता सेनानी, भारत रत्न पं. गोविन्द बल्लभ पंत जी की स्मृति में गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय किया गया। स्वर्गीय पंत जी ने इस विश्वविद्यालय के निर्माण में अभूतपूर्व योगदान दिया था, ये उनकी दूरगामी सोच का ही परिणाम है कि आज यह विश्वविद्यालय देश व विदेश में प्रतिष्ठित संस्थान के रूप में विख्यात है। देश में हरित क्रांति लाने में पन्तनगर विश्वविद्यालय का विशेष योगदान रहा है, जिसके फलस्वरूप हमारा देश फूड ग्रेन प्रोड्क्शन में न सिर्फ आत्मनिर्भर बना है, बल्कि आज हम कृषि उपज के प्रमुख निर्यातकों में से एक हैं। उन्होंने सभी उपाधि प्राप्त कर रहे छात्र–छात्राओं, शिक्षकगण और उनके अभिभावकों को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई दी तथा कहा कि सभी विद्यार्थी भारत जैसे विविधतापूर्ण एवं गतिशील देश, की विरासत को और अधिक समृद्ध तथा भविष्य को और अधिक सशक्त बनाने में अपना योगदान देंगे। दीक्षांत समारोह केवल एक समारोह मात्र नहीं है, बल्कि यह आपकी उपलब्धियों, ज्ञान और उत्कृष्टता को प्राप्त करने के दृढ़ निश्चय का उत्सव भी है। शिक्षा केवल डिग्री ले लेना ही नहीं हैं, बल्कि यह आत्म ज्ञान की प्राप्ति, सशक्तिकरण एवं परिवर्तन का माध्यम भी है। शिक्षा आपके जीवनयापन का माध्यम ही नहीं है, बल्कि यह देश के कल्याण के लिए भी बेहद अहम है। विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों की बुद्धिमता एवं उनके चरित्र का विकास होता है। इस अवसर पर, मैं यहां की फैकल्टी द्वारा आपके बौद्धिक विकास तथा आपको भाविष्य की चुनौतियों को तैयार करने के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र में विकास की अपार संभावनाएं है। भविष्य में आने वाली दूसरी हरित क्रांति में इन्फॉरमेशन टेक्नोलॉजी एवं आर्टफिशियल इंटेलिजेंस का विशेष योगदान रहेगा।

गणेश जोशी ने कहा कि महामहिम जी का आभार व्यक्त करता हूं कि तीन दिनों का समय उत्तराखण्ड में दिया है जो हमारे लिए गौरव की बात हैं। उन्होंने बताया कि दीक्षान्त समारोह में उपाधि पाने में हमारी बेटियों की संख्या अधिक है। उन्होंने बताया कि हमारी बेटियों हर क्षेत्र में देश एवं विदेशों में सर्वोच्च पदों पर असीन है। उत्तराखण्ड में कृषि के क्षेत्र में बढ़ोत्तरी हुयी है। उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री जी की मुहिम अन्तर्राष्ट्रीय मोटे अनाज वर्ष 2023 को 72 देशों में श्रीअन्न के रूप में मनाया जा रहा है। मोटे अनाज में पोषक तत्वों की मात्रा अधिक पायी जाती है तथा उनको उगाने में पानी की आवश्यकता कम पड़ती है।

कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान ने बताया कि आठ वर्षों के बाद पुनः राष्ट्रपति का आर्शीवाद प्राप्त हुआ जोकि एक गौरव की बात है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षण, शोध व प्रसार के क्षेत्रों में पिछले एक वर्ष में प्राप्त की गयी उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। उन्होंने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों के बारे में बताते हुए कहा कि लैण्ड ग्रान्ट पैटर्न की तर्ज पर अमेरिका के इलिनोय विश्वविद्यालय की सहायता से स्थापित पन्तनगर विश्वविद्यालय ने हरित क्रांति के द्वारा देश में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया जिसके लिए नोबल पुरस्कार विजेता डा. नारमन ई. बोरलॉग द्वारा हरित क्रांति की जन्म स्थाली के रूम में अलंकृत किया गया। विगत छः दशको में विश्वविद्यालय ने खाद्य फसलों की उत्पादकता बढ़ाने के अलावा पशुधन, दुध, तिलहनी फसल तथा मत्स्य उत्पादन में भी अपना अहम योगदान दिया है। विश्वविद्यालय द्वारा स्थापना से अब तक 42911 से अधिक विद्यार्थियों को उपाधियां प्रदान की गयीं है। शिक्षा और अनुसंधान में आपसी सहयोग के लिए विश्वविद्यालय ने कई समझौते पर हस्ताक्षरा किये जिनमें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आस्ट्रेलिया की वैस्टर्न सिडनी विश्वविद्यालय, रोमानियां की कृषि विज्ञान और पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय, अमेरिका का इलिनोय, कनाडा की मैनिटोबा विश्वविद्यालय प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त पांच प्रमुख आईसीएआर अनुसंधान संस्थानों के साथ–साथ नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हाइड्रोलॉजी, रूड़की जैसे प्रमुख संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। विश्वविद्यालय को अभी तक 105 पेटेन्टस के लिए आवेदन किया गया जिनमें 29 पेटेन्टस की स्वीकृति मिली है। विश्वविद्यालय में 113वां तथा 114वां अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिनमें लगभग 45000 पंजीकृत तथा

अपंजीकृत किसानों ने मेले का भ्रमण किया और नई तकनीकों एवं उत्पादों के बारे में जाना। किसान मेलों में अन्तर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष के दृष्टिगत मिलेट (श्रीअन्न) के प्रति जागरूकता एवं प्रचार–प्रसार हेतु श्रीअन्न पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। अंत में उन्होंने सभी उपाधि प्राप्तकर्ताओं को दीक्षा दी। इस दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि माननीय राष्ट्रपति द्वारा 1041 विद्यार्थियों को उपाधि व दीक्षा प्रदान की गयी। इस अवसर पर सर्वोत्तम स्नातक विद्यार्थी नेहा बिष्ट को कुलाधिपति स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त 11 विद्यार्थियों को कुलपति स्वर्ण पदक, 11 विद्यार्थियों कुलपति रजत पदक एवं 10 विद्यार्थियों को कुलपति कांस्य पदक प्रदान किये गये। विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य के लिए एक–एक विद्यार्थी सरस्वती पांडा अवार्ड, श्रीमती नागम्मा शान्ताबाई अवार्ड, डा. राम शिरोमणि तिवारी अवार्ड, चौधरी चरण सिंह मैमोरियल इंटेलेकच्यूअल अवार्ड, पूरण आनन्द अदलखा अवार्ड एवं भारत रत्न पण्डित गोविन्द बल्लभ पन्त अवार्ड से विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया तथा दो विद्यार्थियों को भारत रत्न पण्डित गोविन्द बल्लभ पन्त पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

कुलसचिव, डा. के.पी. रावेरकर ने समारोह का संचालन किया एवं अंत में धन्यवाद दिया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रबन्ध परिषद् एवं विद्वत परिषद् के सदस्यों के साथ–साथ विश्वविद्यालय के महाविद्यालयों के संकाय सदस्य, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी तथा प्रदेश सरकार एवं जिला प्रशासन के उच्चाधिकारी उपस्थित थे। निदेशक संचार डा. जे.पी. जायसवाल ने सभी मीडिया हाउस की शांतिपूर्ण वातावरण में रिकार्डिंग की प्रशंसा की।

विश्वविद्यालय के 35वें दीक्षान्त समारोह में दीक्षांत व्याख्यान देते माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु।

विश्वविद्यालय के 35वें दीक्षान्त समारोह में मंचासीन अतिथिगण।

(जे.पी. जायसवाल)
निदेशक संचार